Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ISSN 2454-3705

श्रुतसागर | શ્રુતસાગર

SHRUTSAGAR (MONTHLY)

May-2021, Volume : 07, Issue : 12, Annual Subscription Rs. 150/- Price per copy Rs. 15/-

EDITOR : Hiren Kishorbhai Doshi

BOOK-POST / PRINTED MATTER

नवकार जापमग्न मधुरभाषी

प. पू. आ. भ. श्री अमृतसागरसूरिजी म.सा. को

श्रद्धासुमन के साथ कोटि-कोटि वंदना.

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

For Private and Personal Use Only

पूज्य राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की पावन निश्रा में हिम्मतनगर में श्री शांतिनाथ जिनालय में श्री जीरावला पार्श्वनाथजी, पू. आ. श्री कैलाससागरसूरि गुरुप्रतिमा, पू. आ. श्री आनंदघनसूरि गुरुप्रतिमा की प्रतिष्ठा की झाँकी.

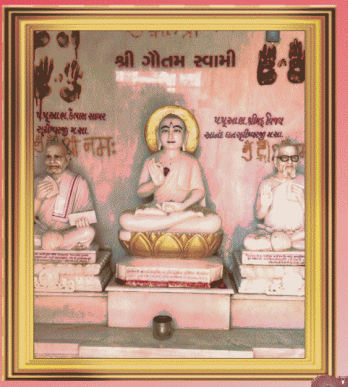

दीव-दमण-लक्षदीप के
प्रशासक
एवं परम गुरुभक्त
श्री प्रफुल्लभाई पटेल के
गृहांगण में गुरुदेव
का पदार्पण.

गुरुभक्तों के गृहांगण में गुरुदेव का मंगल आगमन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

RNI : GUJMUL/2014/66126 ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर श्रुतसागर

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-७, अंक-१२, कुल अंक-८४, मई -२०२१

Year-7, Issue-12, Total Issue-84, May-2021

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Price per copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖ हिरेन किशोरभाई दोशी

❖ सह संपादक ❖ रामप्रकाश झा

❖ संपादन निर्देशक ❖ गजेन्द्रभाई शाह

राहुल आर. त्रिवेदी

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ मई, २०२१, वि. सं. २०७७, वैशाख शुक्ल तृतीया

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोध-संस्थान एवं ग्रन्थालय)

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर-३८२३२६

फोन नं. (079) 23276204, 205, 252 फैक्स : (079) 23276249, वॉट्स-एप 7575001081

Website : www.kobatirth.org **Email :** gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१.	संपादकीय	गजेन्द्र शाह	५
२.	श्रुतप्रेमी दाताओं की सूची	-	७
३.	गुरुवाणी	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	८
४.	Awakening	Acharya Padmasagarsuri	९
४.	अप्रगट ल्रण गुरु चंद्राउला	गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी	११
६.	योगकल्पद्रुम	मुनि देवर्षिवल्लभविजय म.सा.	२१
७.	धर्मकथानुयोगनी महत्ता अने श्री देवभद्रसूरिकृत कथारत्नकोष	मुनि श्री पुण्यविजयजी	२६
८.	पुस्तक समीक्षा	डॉ. हेमन्त कुमार	२८
९.	समाचार सार		३०

एक एक अक्षर भणे, जाणे ग्रंथ वीस्तार।
पयडे पयडे चलत हे, पोहच्ये कोस हजार।।

प्रत क्र. १४१९२०

भावार्थ- जिस प्रकार एक-एक कदम चलते हुए हजार कोस तक पहुँचा जा सकता है, उसी प्रकार एक-एक शब्द पढ़ते हुए सम्पूर्ण शास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में
डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी
अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपादकीय

गजेन्द्र शाह

श्रुतसागर का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस अंक में योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरजी के द्वारा लिखित एक समाधिदायक पत्र व अन्य स्थायी स्तम्भों के अतिरिक्त चार अप्रकाशित कृतियों का प्रकाशन किया जा रहा है।

सर्वप्रथम **"गुरुवाणी"** शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित किये जा रहे लेख में देह की विनश्वरता का साक्षात परिचय कराने वाले कोरोना काल में आत्मा को समाधिमय कैसे रखना, विनश्वर देह से शाश्वत सुख की साधना कैसे करनी, उसका परम समयोचित समाधान देने में समर्थ योगनिष्ठ श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरजी का एक पत्र प्रकाशित किया गया है।

द्वितीय लेख राष्ट्रसंत आचार्य श्रीपद्मसागरसूरीश्वरजी के प्रवचनों की पुस्तक **'Awakening'** से क्रमशः संकलित किया गया है, इसमें भी आत्म अमरता की बात, मृत्यु पर शोक का त्याग, अशुचिमय देहमोह का त्याग और अच्छे कर्मों द्वारा जीवन को सार्थक करने की बात कही गई है।

अप्रकाशित कृति प्रकाशन के क्रम में सर्वप्रथम पूज्य गणिवर्य श्रीसुयशचन्द्र-सुजशचन्द्रविजयजी म. सा. के द्वारा सम्पादित तीन अप्रकाशित **"अप्रगट त्रण गुरु चंद्राउला"** का प्रकाशन किया जा रहा है। इन कृतियों में गुरु गौतमस्वामी, श्री हीरविजयसूरि तथा जसवंत ऋषि की स्तवना, माता-पिता गाम-नगरादि वर्णन के साथ साथ चारित्रादि सद्गुण तथा उनके प्रभाव से सम्बन्धित बातें प्रस्तुत की गई हैं।

चतुर्थ कृति के रूप में मुनि श्री देवर्षिवल्लभ म.सा. के द्वारा सम्पादित **"योगकल्पद्रुम"** प्रकाशित किया जा रहा है। अध्यात्म मार्ग प्रशस्त करनेवाली एवं जीवों को उपदेश देनेवाली यह कृति अनुवाद सहित प्रकाशित की जा रही है।

पुनःप्रकाशन श्रेणी के अन्तर्गत इस अंक में पुण्यविजयजी के द्वारा लिखित लेख **"कथारत्नकोश अने तेना कर्त्ता श्री देवभद्रसूरि"** का क्रमशः अंतिम अंश प्रकाशित किया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत अन्य ग्रंथों में कथारत्न कोश के अवतरणों की बात कही गई है, जिससे इस ग्रंथ की उपादेयता उस समय कितनी रही होगी उसका पुष्ट

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रमाण प्राप्त होता है।

पुस्तक समीक्षा के अन्तर्गत भूलाभाई एवं धीरजलाल देसाई मेमोरियल ट्रस्ट, अहमदाबाद से प्रकाशित जैनशास्त्रों के संदर्भ में लिपि एवं लेखनकला की विकास यात्रा के वर्णनात्मक **"Calligraphy and Art of Writing in Jain Manuscripts"** पुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत की गई है।

यह समय कोरोना के कारण सम्पूर्ण विश्व के लिए तो कष्टप्रद रहा, साथ-साथ जिनशासन के लिए और सागर समुदाय के लिए भी यह महीना क्षतिपूर्ण रहा। हमें इस समयावधि में दो-दो आचार्य भगवंतों का वियोग हुआ है। दि. २४/०४/२०२१ चैत्र शुक्ल १२ को पुनितधामतीर्थप्रेरक पू. आ. श्री प्रसन्नकीर्तिसागरसूरि म.सा. तथा दि. ०३/०५/२०२१ को मृदुभाषी, नवकार मंत्र आराधक, जापमग्न पू. आ श्री अमृतसागरसूरि म.सा कालधर्म प्राप्त हुए, जो हमारे लिए बडी दुर्भाग्यपूर्ण घटना हुई। इन दोनों पूज्यवरों को हम श्रद्धासुमन समर्पित करते है।

हम आशा करते हैं कि इस अंक में संकलित सामग्रियों के द्वारा हमारे वाचक अवश्य लाभान्वित होंगे व अपने महत्त्वपूर्ण सुझावों से हमें अवगत कराने की कृपा करेंगे। जिससे आगामी अंक को और भी परिष्कृत किया जा सके।

श्रमण आरोग्यम्

जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गनाइजेशन (JITO) एवं जैन डॉक्टर्स फेडरेशन (JDF) द्वारा संचालित श्रमण आरोग्यम् के द्वारा जैनधर्म के सभी संप्रदायों के सभी पूज्य साधु-साध्वीजी भगवन्तों की चिकित्सा की संपूर्णतः निःशुल्क व्यवस्था की गई है । इसके अन्तर्गत संपूर्ण भारतवर्ष के सभी राज्यों एवं मुख्य शहरों में अवस्थित चिकित्सालयों को जोड़ा गया है । जहाँ कैशलेस एवं त्वरित चिकित्सा की सुन्दर व्यवस्था की गई है । यह योजना गत 9 वर्षों से संचालित है, इस योजना के तहत अभी तक अनेक पूज्य भगवन्तों का इलाज सफलता पूर्वक किया गया है तथा वर्तमान में किया जा रहा है । जीतो की ओर से एक **"श्रमण आरोग्यम्"** नामक निर्देशिका प्रकाशित की गई है, जिसमें संबंधित सभी सूचनाएँ प्रकाशित हैं । सभी पूज्य भगवन्तों से निवेदन है कि इस योजना से जुडें ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रुतप्रेमी दाताओं की अनुमोदना

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

सकल जैनसंघ का गौरवस्थान

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

सदुपदेशक : प्राचीन श्रुत-तीर्थोद्धारक, राष्ट्रसंत

पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा

श्रुतप्रेमी दाताओं की नामावली

- श्री जैन श्वेताम्बर नाकोडा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर-राजस्थान
- ट्रेवल वर्ल्ड, नवरंगपुरा-अहमदाबाद
- श्री सुधीरभाई शांतीलाल शाह, अहमदाबाद
- श्री संभवनाथ जैन ट्रस्ट, बिसलपुर-राजस्थान
- श्री सिद्धिभुवन मनोहर जैन ट्रस्ट, पालडी-अहमदाबाद
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक सुधारा खातानी पेढी, महेसाणा
- श्री वेपेरी श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैनसंघ, वेपारी-चेन्नई
- श्री श्राविका जैन उपाश्रय, कतारगाम-सुरत
- श्री दशापोरवाड सोसायटी जैनसंघ, पालडी-अहमदाबाद

धन्यवाद... अनुमोदना... अभिनंदन...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवाणी

क्षणभंगुर जीवनने धर्म द्वारा सार्थक करवानो संदेश आपतो एक पत्र

योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरि म.सा.

संवत् १९६८ चैत्र वदि ०)) बुधवार. ता. १७-४-१२ पादरा.

क्षणभंगुर एवा मनुष्य शरीरनो भरोंसो नथी। पाणीना परपोटा जेवी मनुष्य जींदगी छे। हजारो विघ्नोथी मनुष्य जींदगी खरेखर भय युक्त छे। संसारनी असारतानो विचार करवाथी खरो मार्ग सुजे छे। आ दुनियामां कोइनुं शरीर सदाकाल रहेतुं नथी; मरणनो भय माथे जाणीने प्रमाददशाथी मुक्त थइने हे चेतन ! हवे धर्मनी आराधना कर। धर्मनी आराधना कर। धर्मनी आराधना कर। काल करवानुं होय ते आज कर। एक श्वासोच्छ्वास पण तुं नकामो गाळ नहि। मनुष्य जींदगीमां धर्मनी जेटली कमाणी करवी होय तेटली करी शकाय छे। जेनी किम्मत थाय नहि, एवा मन वाणी अने कायाना योगने हे आत्मन् ! तुं धर्म व्यापारमां जोड। वारंवार आवो उत्तम अवसर तने मळनार नथी। आत्माना शुद्ध स्वरूपनुं श्वासोच्छ्वासे स्मरण कर्या कर ! हे चेतन ! आ असार संसारमां एक धर्म छे ते सारभूत मानीने तेनी प्राप्ति माटे क्षणे क्षणे प्रयत्न कर्या कर। ज्ञान अने सत्तानो अहंकार कर नहि। कोइ पण जीवने पीडा थाय, एवो मन वाणी अने कायाथी प्रयत्न करीश नहि। सद्गुणो माटे दररोज अभ्यास कर। पोतानामां रहेला दोषोने टाळवा माटे प्रयत्न कर। भूल्यो त्यांथी फरीथी गण। अगम एवुं तारूं स्वरूप अवबोधवाने माटे दररोज आत्मचिंतन कर्या कर।

श्री वीतराग प्रभुना सद्गुणोनी उपासना करीने जाग्रत् रहेवा प्रयत्न कर। मनमां उत्पन्न थनार मोहना अध्यवसायोने टाळवा माटे सदाकाल प्रयत्न कर्या कर। रागद्वेषना विकल्पथी रहित एवा निर्विकल्प चेतन स्वरूपनो अनुभव करवा ध्यान कर। आत्माना शुद्धधर्मनो रसियो थवाने उद्यम कर के जेथी पररागादिभावनी रसिकता टळे। अने सहजानन्द सुखनो भोगी तुं बनी शके। ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी सेवना करवी तेज आत्मानी सेवा छे। बहु बहु बोलीने पण हे चेतन ! ते प्रमाणे प्रवृत्ति करीने आगळ चढ। एक संकल्प पण नकामो जवानो नथी। माटे आत्माना शुद्ध स्वरूपनी भावना कर। हे आत्मन् ! तारा गुणोने प्रकट करवानो आ अमूल्य समय छे, तेनी सफलता कर।

धार्मिक गद्य संग्रह भाग – १, पृष्ठ –२७४-२७५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Awakening

Acharya Padmasagarsuri

(from past issue...)

SECTION II

DISCOURSES

Self-Knowledge

It is easy to deliver discourses on matters relating to the soul; but it is hard to live according to its dictates. Action or conduct is the true test of knowledge.

We find it difficult to spend even five minutes in praising others or in speaking well of others; but we readily spend hours together in decrying others or in speaking ill of others. We enjoy speaking ill of others. People feel happy when they speak ill of others or when they spread scandals against others because they think they are superior to others; but they forget that they themselves are at fault when they blame others. A poet has written:

"Those people are good who do not speak ill of others".

A noble man can contribute to the welfare of the nation; but a bad man brings ruin. How can a man who knows the nature of his soul, waste time in calumniating others?...

Why should people weep over the death of their relatives or friends when the soul is immortal?

Compared to the body which has a form, the soul which is formless, is of greater importance; yet why is it that people are fascinated by physical beauty? Why do not people realize that a beautiful person may be wicked and that an ugly

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

person may be good? Even a prostitute has a beautiful body but in society she is not given respect. Why do people get attracted by the beauty of the body knowing the truth that even a beautiful person may be wicked. A poet says: "The body which appears fascinating contains all odious things. It is a store-house of unclean things. It is futile to desire this body which is a store-house of unclean things enveloped by a smooth skin".

Why do not people think in this manner and realize this truth?

The good and evil karmas cling to the soul. A calf recognizes its mother among thousands of other cows and follows it. In the same manner, karmas (our good and evil actions) follow our soul. It is on account of this reason that some are happy and some are unhappy in life. A man who has attained self-realization looks upon those in sorrow, with compassion. He is not a slave to his senses. Do you know why he is not a slave to his senses; why he does not use his senses as doors and windows and why he does not allow wicked ideas to enter his soul? He knows that the soul is not a box into which unclean things can be put and so, he does not fill it with unclean ideas.

For example, the eyes can bring progress or decline. We can get noble thoughts by looking at the image of the Lord or we can entertain sensual desires and fill our hearts with unclean feelings by looking at physical beauty. The man who is sensible would never commit the blunder of polluting his heart thus.

(Continue...)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अप्रगट त्रण गुरु चंद्राउला

गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी

(चंद्राउला काव्यनो संक्षिप्त परिचय आगळ आपणे चतुर्विंशति जिन चंद्राउला [श्रुतसागर मेगेझीन वोल्युम-०७, अंक-०२, जुलाई-२०२०] ना परिचयमां जोयो हतो माटे अहीं ते विगतोनी पुनरुक्ति न करता, ते परिचय वाचकोने त्यांथी ज जोइ लेवानी भलामण करीने अमे अहीं फक्त संपादित त्रण कृतिओनो परिचय वाचकोना अभ्यासार्थे रजु करीए छीए।)

अहीं संपादित करायेल चंद्राउला काव्यो मुख्यत्वे गुरुभवंतने केंद्रमां राखी रचायेली लघु स्तवनाओ छे। कविओए अहीं अनुक्रमे गौतमस्वामिनी, पू. हीरविजयसूरिजीनी तथा ऋषि जसवंतनी स्तवना आलेखी छे। त्रणे कृतिओनी काव्य प्रकार, गुरुस्तुति तथा अनुमानित रचना काळ (१८मी सदी) एम त्रणेय मां अहीं एक समानता जोवा मळे छे। कृतिओनो परिचय नीचे मुजब छे।

(१) **गुरु गौतमस्वामी चंद्राउला** - प्रस्तुत कृति गुरु गौतमना विलापनुं आलेखन करती रसाळ रचना छे। कृतिना प्रारंभना बे पद्यमां कविए प्रभु वीरनी अपापापुरी नगरीनी अंतिम देशनानुं तथा निर्वाण समयनी विगतोनुं आलेखन करी त्यारपछीना पद्योमां अनुक्रमे प्रभु साथेनी गुरु गौतमनी अविहड प्रीतिनी, प्रभुनुं निर्वाण सांभळी दुःखित हृदयवाळा तेमनी विरह व्यथानी, तेमना वडे प्रभुजीने अपाता उपालंभोनी तथा प्रभुनी वीतरागी दशानुं स्मरण थता वीतरागीपणाना भावोथी तेमने प्राप्त थता केवलज्ञाननी वातो अहीं सुंदर रीते गुंथवामां आवी छे।

खास अहीं प्रभुने अपायेल उपालंभनी वर्णनामांना "हमकु दूरि भेजी करी रे, बालक परि समजायो", "शिवपुर-गढ-गिर दाणवा रे, कूच भए जिनरायो", "बालक परि आडउ करी रे गइल न आवइ मीतो", "मारगि कछु मागत नहीं रे, नवि संतापइ देवो" "मुगति नही किउं जाइगइ रे, इउं छल करीय पहूतो", "करीय जोर छीनत नहीं रे केवल-माल बहूतो" जेवा पदोमां गुरु गौतमनी विरह वेदनानी साथे साथे कविनी अद्भुत उत्प्रेक्षाओ पण कृतिमां रसाळतानुं आरोपण करे छे।

कृतिकार परिचय- प्रस्तुत कृति कवि कुशलहर्षनी रचना छे। कृतिकार कया गच्छना छे के तेमनी कृति रचनानो समय शुं छे तेनी काव्यमां कशी नोंध नथी। परंतु कृतिनो अभ्यास करता तेना शब्दप्रयोगो परथी तेनी रचना १८ मी सदीमां थई होवानुं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तथा कृतिकार मारुगुर्जर तथा हिंदी भाषाना पण सारा जाणकार होवानु जोइ शकाय छे। वळी कृतिना अंत्यानुप्रासो तथा तेनुं पदलालित्य पण कृतिकारने कोई निवडेल कवि होवानु अनुमान करावे छे।

(२) **परमगुरु श्रीहीरविजयसूरि चंद्राउला**- जगद्गुरु हीरविजयसूरिजीनी जीवनचरित्र विषयक कृतिओनी माळामां ऊमेरातो एक नवो मणको एटले प्रस्तुत चंद्रउला काव्य। सूरिगुणस्तवनाथी प्रारंभायेल आ काव्यमां कविए कृतिना बीजा, त्रीजा तथा चोथा पद्यमां सूरिजीना पोताना तथा तेमना गुरु, माता, पिता, बहेन, गाम, नगरना नामनी ऐतिहासिक विगतो टांकी शेष पद्यो द्वारा फरी गुरुस्तवना आलेखता काव्यनुं समापन कर्युं छे।

कृतिकार परिचय- अहीं पण कर्ता एटले के लखमण गुरुना शिष्य ते कोण छे तेवुं स्पष्ट थतुं नथी । जो के कृतिनी भाषाशैली परथी रचना १८मी सदीना पूर्वार्धनी होय तो ना नहीं, परंतु हजु ते अंगे वधु तपास करवानी जरूर छे।

(३) **जसवंत ऋषिना चंद्राउला**- उपरोक्त बन्ने कृतिओनी अपेक्षाए प्रस्तुत काव्य थोडुं मोटुं चंद्राउला काव्य छे। २१ गाथाना आ काव्यनी शरूआतमां कविए प्रभु वीरने नमस्कार करी त्यारपछीना ४ पद्योमां श्रीपूज्य जीव ऋषिना तथा आचार्य वरसिंघजीना गुणवैभवनी वातो आलेखी छे। खास अहीं जोवा मळती वरसिंघजीना माता-पिताना नामथी विगत काव्यनी महत्त्वपूर्ण सामग्री छे।

कृतिना छट्ठा पद्यथी कविए अहीं जसवंत ऋषिना चरित्रनी वर्णनानो प्रारंभ कर्यो छे। जेमां पूर्वार्धना पद्योमां कविए विशेषे ऋषि जसवंतजीना जन्मस्थान, नगर, वंश, दीक्षा संवत तथा देहलावण्यनी महत्वपूर्ण विगतो नोंधी, उतरार्धना पद्योमां सूरिजीना गुरुभगवंत साथे खंभात पधार्यानी, तेमनुं आचार्यपद सीरोहीमां थयानी, आचार्यपद पछी खंभात थई चातुमासार्थे वडोदरा रह्यानी तथा त्यां चातुर्मासमां सारी आराधना तेमज व्याख्यानमां उववाइ सूत्र वंचायानी दस्तावेजी विगतो टांकी काव्यनुं समापन कर्युं छे। अहीं कृतिनो अनुमानित रचना समय १८ मी सदी पछी नो गणाय।

जो के कृतिनो अंत्य भाग जोतां कृति त्यां पूर्ण थती होय तेवुं लागतुं नथी, वळी अहीं कृतिकारनो उल्लेख पण न होवाथी उपरोक्त वात वधु पुष्ट थाय छे। परंतु हमणा तो ज्यां सुधी कृतिनी अन्य हस्तप्रत न मळे त्यां सुधी तो कृतिलेखकने ज प्रमाणभूत गणीने कृतिने पूर्ण गणी कृतिकारना परिचय माटे तेमनी, चरित्रनायकना चरित्रविशेनी के तेमना समयनी अन्य कृतिओ शोधवी रही।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रांते संपादनार्थे प्रस्तुत कृतिओनी हस्तप्रत नकल आपवा बदल अनुक्रमे श्रीसंवेगी उपाश्रय-अमदावाद, श्रीसंघ भंडार-घाणेराव तथा श्रीगोडीजी महाराज श्वे. मू. जैन संघ भंडार-मुंबईना व्यवस्थापकोनो खूब खूब आभार।

श्रीकुशलहर्ष मुनि कृत

गौतमस्वामि चंद्राउला

॥एर्द०॥ नमः श्रीसर्वविदे ॥

सरस वचनरस जिनवरतणउ रे, खिनइ[१] न छोरीउ[२] जायो,
सोल पुहर[३] की देशना रे, तइं दीधी जिनरायो।
तइं दीधी देशन जिनराये, पुरीय **आपापा** भींतरि आये,
बहुत जीवकुं रंग ऊपाए[४], समकित-रस अमीय-रस पाए ॥१॥ जी वीर जिनजी रे...

तुझ सेती[५] बहु नेह, हउं(हुं) किउं[६] तोरीउ[७] रे,
तुझ चरणे मझ चिंत[८], हुं किसिउं छोरीउ[९] रे। (आंकणी)
धन धन त्रिशला माडली[१०] रे, जनमिउ श्रीजिनभाणो,
काती मास अमावसइं रे, वीर लहिउ निरवाणो।
वीर लहिउ निरवाण सुणीई, प्रहसम जिउं[११] मारगि आई,
गोतम विलवति[१२] सुनहु[१३] गोसाई[१४], हमकुं छोरि गए किसि ताई[१५] ॥२॥ जी वीर...

हमकुं दूरि भेजी करी रे, बालक परि समझायो,
शिवपुर-गढ-गिर दाणवा[१६] रे, कूच[१७] भए[१८] जिनरायो।
कूच भए जिन वात न यानी[१९], देई चले हम बिरह[२०] नीसानी,
अकह[२१] कहानी की परि कीनी, पूछतु हिमति ए किणि[२२] दीनी ॥३॥ जी वीर...

कहिय तुहइ[२३] सुनो वीरजी रे, काहु[२४] कीउ हम सांई[२५],
तुम्ह विन क्षण एक नवि रहिउ रे, गयो विछोह[२६] विलाई[२७]।
गयु विछोहि विलाई राजे, कबही रजा नही कीनी बाजे[२८],
गुनह विना हम छोर पधारे, लहे मामला[२९] नहीं तुम्हारे ॥४॥ जी वीर...

खिजमतिगयर[३०] करी किसइ[३१] रे, चरणकमल को दासो,
इणिं अवसरि किउं[३२] छोरीउ रे, साहिब सुनि अरदासो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साहिब सुनि अरदास हम्हारी[३३], मुगति गए तुम्ह हमहि[३४] वी(वि)सारी,
चाकरी-चोर[३५] भए नहीं क्यारइ, कुटिल[३६] करीइउं कांइं धूतारइ ॥५॥ जी वीर...

सेवक साचो छांडतां रे, अरति न पाईवीतो[३७],
बालक परि आडउ[३८] करी रे, ग[इ]ल[३९] न आवत मीतो[४०] ।
गइल न आवत मीत हमारे, कबहि कमरि[४१] न चरत[४२] तुम्हारे,
पालवह[४३] लगत[४४] नहीं किवारइ[४५], जोर करी नवि रोहत[४६] क्यारइ ॥६॥ जी वीर...

मुगति नहीं किउं जाइगइ[४७] रे, इउं[४८] छल करीय पहूतो,
करीय जोर छीनत[४९] नहीं रे, केवल-माल बहूतो ।
केवल-माल न लेअत छीनी, विचरत[५०] कुछु मति सीख न दीनी ।
भार किसिउ तुम्ह न करत वाटइं[५१], करीअ वेग चले शा माटइ ? ॥७॥ जी वीर...

मारगि कुछु मागत नहीं रे, नवि संतापत देवो,
तुझ निजीक[५२] रही करी रे, गयरमुसारा[५३] सेवो ।
गयरमुसार करत हुं सेवो, केवलनाण-खजाना लेवा,
अवसरि प्यारू[५४] पासि धरीजिइ, तेरी परिइं[५५] किउं दूरी करिजिइ ॥८॥ जी वीर...

दायम[५६] देवक-दुंदुभी रे, गाजइ गुहिर[५७] निसानो[५८],
तीने कोट बहु रखतगइ[५९] रे, छत्र चामर बहुमानो ।
छत्र चामर केरी ठकुराई, दोलति तेरी किनहि[६०] न पाई,
तुं सुलतान सुभा(जा?)न[६१] सुहावउं, करीय वीर हुं किसहिं[६२] बोला[व]उं ॥९॥ जी वीर...

वलीय वलीक किसिकुं[६३] कहुं रे, नाम भदंत भदंत,
किसहिं पूछउं मन-वातडी रे, मुगति गए भगवंत ।
मुगति देश भगवंत पधारे, वीर वीर करी बहुत पोकारे,
वीर छोरि वी वी मुखि लीनी, दिल्लि(ल्ल) वीरजीसुं लयलीनी[६४] ॥१०॥ जी वीर...

गोतम अंदेसइ[६५] घणउं रे, हुं मतिमूढ अयानो[६६],
बहुत प्रमादिइ वीरनुं रे, नहि जान्यौ निरवानो[६७] ।
नहि निरवान लहिउ जिनजीनो, श्रुत-उपयोग खरू नवि दीनो,
भगतिभाव भली नवि राखी, धिग धिग नेह भये इकपाखी[६८] ॥११॥ जी वीर...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अबहिं मइं जानिउं खरुं रे, साचउ इह वीतरागो,
मोह-बंध छोरत लही रे, सुकलध्यान-सुखभागो।
सुकलध्यान कइ तीजइ भांगइ, दूर करइ जिण-राग विरागइ,
सुरजन[६९] दुरजनकुं समभावइ, सो साहिब वीतराग कहावइ ॥१२॥ जी वीर...
रागरहित भगवंतकुं रे, ध्यान धरउ मनि जामो[७०],
मुगति जाइ जिन भेजीउ[७१] रे, केवल-कागद तामो।
केवलरूपिइं कागद आवइ, पुहर-सभा[७२] के राज पठावइ[७३],
कुशलहर्ष के गोतम-राजे, चिरंजीव नितु नवल दिवाजइ ॥१३॥ जी वीर...

२) परमगुरु श्रीहीरविजयसूरि चंद्राउला[1]

॥९६०॥ सकल सोभागी सुंदरुं रे, महिमावंत मुणिंद,
तपगछनायक गुणनिलु रे, **हीरविजयसूरिंद**।
हीरविजयसूरिंद ज गाओ, जिम मनवांछित संपद पाओ,
अहनिशि सेव करइ मुनिव्रंद, ए गुरु प्रतिपओ[७४] जां रवि चंद ॥१॥ जी हीरजी जी रे,
तुम्ह मूरति मोहनवेलि, वली वली जोइय[७५] रे,
प्रभुवाणी-गंग-विसाल, पाप-मल धोइय रे। (आंकणी)
गुज(र्ज)रधर- मंडलतणु रे, मंडण[७६] नयर विशेष,
पाल्हणपुर रुलीआमणुं[७७] रे, इंद्रपूरी सम लेख[७८]।
इंद्रपुरी सम नयर वखाणुं, धनपति धनद समाणां जाणूं(णुं),
तिहां मुखि साह **कुंअरु** गुणवंत, सतीअ सिरोमणि **नाथीअ** कंत ॥२॥ जी हीरजी..
तस कुलमंडण अवतरिउ रि(रे), कुंअर महइ(हि)मान(नि)धान,
लगन जोग-बल रासथी[७९] रे, दीधं(धुं) **हीर**जी नाम।
दीधं(धुं) हीरजी नाम जग हीरउ, जाउ सुणीअ सवि हरखउ,
वाधइ कुंयर गुणह-गंभीर, **विमा(म)लाई** राणीनु वीर ॥३॥ जी हीरजी...
साम **सुधर्मा** सम वडो रे, **विजयदानसु(सू)रिराज**,
देखी कुंअर गुणनिलु रे, सकल संघ हितकाज।

---

1. बीजा तथा त्रीजा चंद्रउला काव्यमां 'इ' ना अर्थमां 'य' नो प्रयोग घणी जग्याए करायो छे ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सकल संघ हितकाज ज कीधउ, देई दीख गणधरपद दीधउ,
दिन दिन दीपइ भगवंत, नान(ण)-सागर किरिया-गुणवंत ॥४॥ जी हीरजी..

सील(लि) **थूलिभद्र** जाणीइ रे, बुद्धि **वयरकुमार,**
लबधि गौतम अवतरिउ रे, [गुणसंपद भंडार।]
गुणसंपद-विधि अंगि धारइ, भविअजीव भव-पार उतारइ,
सेवक मनवंछित-चिंतामणि, कुमती(ति)अ-धूक[८०]-तमोभर[८१]-दिनमणि[८२] ॥५॥
जी हीरजी...

कुमती(ति)-गजघट[८३]-केसरी[८४] रे, दू(दु)रित[८५]-रजोभर[८६]-वायु,
अठ(ट्ठ)मि शि(श)शि जिसी नीलवटी[८७] रे, कदली-कोमल[८८] कायु।
कदली-कोमल कुंअली काया, य(अ)द्भुतरूप विगत-मद-माया,
पंच महव(व्व)[य] दुध(द्ध)र धारी, जय जय श्रीगुरु जगहितकारी ॥६॥
जी हीरजी...

गुरुमूरति सुखवेलडी रे, सेलडी सरस खजूर,
वाणी साकर पांहिं गली [रे], सुणतां आनंद-पूर।
सुणतां हिअडुं आवि हेलइ, ए गुरु दरसण करता गेलि,
अहनिशि गुण गावइ नर नारी, **लखमण** गुरु शिष्य संपदकारी ॥७॥ जी हीरजी...

३) जसवंत ऋषि चंद्राउला

॥ऍ०॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
श्री**सिद्धारथ**-खित्रिकुलि उपना रे, चउवीसमा जिनदेवो,
तेण(णि) जिनशासन दीपावीउं रे, सुर नर करइ तेहनी सेवो।
सुर नर सेव करइ ते जिननी, केवली जाणइ वात ते मननी,
देवाधिदेवने चरणे रहि(ही)य, **महावीर** नामि मुक्ति जई[य] ॥१॥
जी मुनी(नि)वरजी रे (आंकणी)

आठिम पाखी बेहु तुंबडां[८९] रे, तारइ भव-संसारो,
जीव ऋषि शिष्य सेवतां रे, अविचल वैकंठ-वासो।
अविचल वैकंठ-वास रे नेमा[९०], जिहां जीवीय[९१] तिहां कीजीय सेवा,
तप संयमना अरिहंत साखी, [सदा]इ पालो तुम्हे आठिम पाखी ॥२॥ जी...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुंदरि-सू(सु)त **वरसिंघ**जी [रे], दयातणा निधानो,
संघ सहु दिन [दिन] प्रति रे, दीयते अधिक मानो।
दीय[ते] अधिक मान रे देवा, श्रीपूज्यजीनी नित्य कीजइ सेवा,
सुंदरि-सुत सोभागी कहीय, जेहना पुन्यनो पार न लहीय ॥३॥ जी...

श्रीपूज्य श्रीआचार्यजी बे[उ भला] रे, भली ते गुरु शिष्यनी जोडो,
तेहमांहि साधु ज भला रे, पूर्व(रव)इ[९२] श्रावकना कोडो[९३]।
पूर्व(रव)इ श्रावकना कोड सो कहीय, चालो श्रीपूज्य आचार्यनइ वांदवा जइय,
वांदी करीनइ चरणे रहि(ही)य,[पालइ?] दयाधर्म साचो लहीय ॥४॥ जी...

श्रीपूज्य श्रीआचार्यनी रे, प्रतपो अविचल जोडो,
वि(व)सुधाइ विहार करंता रे, पहोच{व}इ[९४] भवी(वि)कनां कोडो।
पहोच{व}इ भवी(वि)कनां कोड सो पु(पू)रा, दया-दानइ गुरुजी सूरा,
जोड अपु(पू)रव गुरुजीनी मली, जाणइ दूधमांहि साकर भली ॥५॥ जी...

आऊयि नयरि जनमीया रे, **उसवंस** कुलि ध्यनो(धन्नो),
नानपणि वैरागीआ रे, सकल-कला-व्युतपनो(न्नो)[९५]।
सकल-कला-व्युतपन(न्न) ते जाणी, श्रीपूज्यजी मुखि बोलि वांणी,
जइ **सोझति**नइ दीजइ दीक्षा, यम[९६] सकल संघनी करइ री(र?)क्षा ॥६॥ जी...

मात कहि सुणो जसवंतजी रे, विषम संयमभारो,
घोर परिसा[९७] जीपवा रे, सरस नि[रस] ते आहारो।
सरस निरस ते आहार रे जाया[९८], अतिसुकमाल छे ताहरी काया
[इह] संसारना भोगवि(वी) भोग, वडपणि[९९] लेजे संयम योग ॥७॥ जी...

[पुत्र कहि सूत्र ?] तणि मर्मि, अतिहिं विषम संयमभारो,
घ(घो)र परिसा जीपवा रे, लेउं चारित्र सारो।
लेउं चारित्र सारो रे माडी, मुखह दे[उं न]तुम्हे वाणी टाढी[१००],
ए संसारना अनित्य भोग, द्यउं[१०१] अनुमति लेउं संयम-योग ॥८॥ जी...

मात-[पिताइ] हरख्यइ करी रे, आपी अनुमति सारो,
घोर परिसा जीपजो रे, उतरजो भव पारो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उतरज्यो(जो) भव पार रे पु(पू)त्ता, ए संसारमाहि रह्या ते खु(खू)ता[१०२],
सीहतणी पयिरइ[१०३] थायो सूरा, गुरुतणा व[च]ना व[हिज्यो] पु(पू)रा ॥९॥ जी...

संवत सोल ओगणपंचासमइ**(१६४९)** रे, महा सुदि तेरसि सारो,
श्रीपूज्यजीयि स्वि-हस्त करी रे, दीधो संयमभारो।
दीधउ(धो) संयमभार ते वारु, श्रीजसवंतजी भव्यजीवना तारु,
अंब[१०४] जोतां कल्पतरु पायो, ध्य(ध)न जननी जेणइ जसवंत जायो[१०५] ॥१०॥ जी...

जसवंतजी नाम सोहामणु रे, मुख जाणइ पुण्यम चंदो,
व्याख्यान ते अमृत क(झ?)रइ रे, मोहइ मनुष्यना वृंदो।
मोहइ मनुष्यना वृंद रे सहिए(हीय), जसवंतजीना गुण केता कहि(ही)य,
सुधारस वाणी मुख्य(ख)इ बोलइ, नहीं को जसवंतजी तोलइ ॥११॥ जी...

गछमाहि एक उदउ[१०६] रे, जसवंतजी तेहनुं नामो,
सुर नर किंनर देवता रे, तेहना करइ गुणग्रामो।
तेह तणा गुणग्राम ते करइ, दर्शन दीठइ हयिडुं ठरइ,
सोभागी गुरुजीने चरणे रहीय, मुक्तितणा फल वेगा लहीय ॥१२॥ जी...

दुसम आरइ पांचमइ रे, गुरु गोयमनइ अनुसार्यो(रो),
सुलंभबोधि प्राण(णी)नइ रे, उतारि भवपारो।
उतारि भव पार रे सहीए(य), जसवंतजी नामइ मुक्ति जई[य],
एणइ कालि जे करइ सेवा, ते थाय वि(वै)मानी(नि)क देवा ॥१३॥ जी...

जसवंतजी मुख अवलोकतां रे, पातिक सघलां जायो,
आंखइ ते अमृत ठर[इ] रे, हयिडइ हरख न मायो।
हयिडइ हरख न माय रे सहीए, जसवंतजीना गुण केता कहीय(ए)
हवइ घणा जनमनुं पातिक गउं[१०७], जसवंतजी दीठइ हयिडुं टाढुं थउं ॥१४॥ जी...

श्रीआचार्यजी भले पधारीआ रे, सहु को जोतुं हूंतुं वाटो,
वखाण ते सहू सांभलो रे, मुंको मिथ्या ठाटो[१०८]।
मुंको मिथ्या ठाटो रे सहीए(य), माया मुंकीनइ चरणे रहीय,
खंभाइतना श्रावक गुरु [ते]डाव्या, पुण्यनइ योग्य(ग)इ श्रीआचार्यजी आव्या ॥१५॥ जी...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीआचार्यजी पधारता रे, सांभल्या सघलि .....,
....., मन तणइ ते रंग्यो ।
मन तणि(णइ) रंगि सा.**हमाय**, त्रिणि खमासमण देई वंदि(दी)य पाय,
भलि आज जस[वंतजी मल्या], मनना मनोरथ सघला फल्या ॥१६॥ जी...

परबत-सुत गुण वर्णवुं रे, मुनी(नि)वरनो राजानो,
श्रीपूज्यजी दिन दिन प्रति रे, दीय अधिक ते मानो ।
दीय अधिक मान ते सही, दिन त्रासीए[१०९] तेहनइ पदवी थई,
कहि श्रीपूज्यजी एहना गुण छइ बहू, महारइ थानकि मानो सहू ॥१७॥ जी...संघ

सहूए तहेत करी रे, सीस चढावी आणो,
दिन दिन तेजइ दीपता रे, यम उगमतो भाणो ।
यम उगमतो भाण ते दीपइ, दर्शन दीठइ पातिक छीपइ,
कर जोडी प्रभु मुनीय कह्युं, आचार्यपद **सीरोहीय** थउं ॥१८॥ जी...

त्रंबावती नयर सोहामणु रे, जिहां श्रावकना बहु वृंदो,
तिहां जसवंतजी पधारीआ रे, ग्रहगणमांहि ज(य)म चंदो ।
ग्रहगणमांहि यम चंद्र ते सोहइ, संघतणुं मन दीठइ मोहइ,
सुधार[स]-वाणी मुखइ झरइ, भव्यजीव सांभली संसार तरइ ॥१९॥ जी...

श्री**युगप्रधान**जी अवधारयो रे, मोरी वीनती एकज सारो,
अत्रना संघनी उत्कंठा घणी रे, ते पु(पू)रवो गणधारो ।
ते पु(पू)रवो गणधार रे स्वामी, आचार्यनी पदवी तुम्हे पामी,
से[व]कनी वीनती हयिडि धरो, कृपा करी अत्र चउमासुं करो ॥२०॥ जी...

वटपद्रि चउमासुं रह्या रे, श्रावक मनि अति गेल्यो,
तप [जप] ते बहोलां[११०] थया रे, मु(मू)रित मोहनवेल्यो ।
मु(मू)रति मोहणवेलि ते साची, **उ[व]वाई**नी प्रति वखाणि वाची,
कहे श्रावक अम्हे निष्पाप थया, भलि(ल)इ जसवंतजी चउमासुं रह्या॥२१॥ जी...

॥ इति [जसवंत ऋषि] चंद्राउला समाप्ता ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शब्दकोश

१. क्षण एक, २. छोडाय, ३. प्रहर, ४. उपजावे, ५. साथे ६. केम, ७. तोडायो=दूर करायो, ८.ध्यान, ९. छोड्यो, १०. माता, ११. जेम, १२. विलाप करे, १३. सांभळो, १४. स्वामी, १५. तात, पिता, १६. जीतवा, १७. प्रस्थान माटे सज्ज, १८. थया, १९. जाणी, २०. विरह, २१. न कहेवायेल, २२. कोणे, २३. तमने, २४. केम, (?), २५. स्वामी, २६. वियोग, २७. ?, २८ ?, २९. घटना(?), ३०. सेवक, ३१. कोण(?), ३२. केम, ३३. अमारी, ३४. अमने, ३५. सेवाना चोर, आळसु, ३६. कपट, ३७. पामवी, ३८. विघ्न, अंतराय, ३९. ?, ४०. मित्र, ४१. केड पर, ४२. चडवुं, ४३. पालव, ४४. वळगत, ४५. क्यारेय, ४६. चडवु, ४७. जग्या, ४८. एम, ४९. खेंची लेत, ५०. चाली जता, ५१. मार्गमां, ५२, नजीक, ५३. ?, ५४. स्वजन, ५५. जेम, ५६. हमेशा, ५७. गंभीर, ५८. नोबत, ५९. प्रकाशे (?), ६०. कोईए, ६१. सूर्य(?), ६२. कोने, ६३. कोने, ६४. रच्यो-पच्यो, ६५. अनुमान, आशंका, ६६. अज्ञानी, ६७. निर्वाण, ६८. एक पक्षी, ६९. सज्जन, ७०. ज्यारे, ७१. मोकल्ये, ७२. ?, ७३. मोकले छे, ७४. प्रकाशो, ७५. जोईए, ७६. आभूषण, ७७, मनोहर, ७८. जाण, ७९. राशी, ८०. घूवड, ८१. अंधकारनो समुदाय, ८२. सूर्य, ८३. हाथीओनो समुदाय, ८४. सिंह, ८५. पाप, ८६. धूळनो समुदाय, ८७. भाल, कपाळ, ८८. केळ(वृक्ष)ना जेवी कोमळ, ८९. एक वृक्षनुं फळ(जे पाणीमां डूबे नही), ९०. नियमा, ९१. जीवतर, ९२. पुरे, ९३. ईच्छा, ९४. पूरे, ९५. ज्ञाता, ९६. जेम, ९७. परिसह, ९८. पुत्र, ९९. वृद्धत्व,१००. निरुत्साही, १०१. आपो, १०२. खूंप्या, १०३. जेम, १०४. आंबो, १०५. जन्म आप्यो, १०६. उग्यो, १०७. गयुं, १०८. भपको, १०९. त्यांसी, ११०. घणा.

❋ ♦ ❋

(अनुसंधान पृष्ठ २७ पर से)

आ प्रमाणे अहीं कथारत्नकोशनुं अनुकरण अने अवतरण करनार सुविहित पुरुषोना बे-त्रण ग्रंथोनी तुलना करी छे, परंतु बीजा आचार्योनी कृतिमां पण कथारत्नकोशनां अनुकरणो अने अवतरणो जरूर हशे, परंतु अहीं तो आटलेथी ज विरमुं छुं। आ अनुकरणो अने अवतरणोए पण प्रस्तुत कथारत्नकोश ग्रंथना संशोधनमां वधारानी सहाय करी छे एटले ए दृष्टिए पण ते ते अनुकरण करनारा अने अवतरण करनारा आचार्यो विशेष स्मरणार्ह छे।

॥इति॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अज्ञातकर्तृक

योगकल्पद्रुम

मुनि देवर्षिवल्लभविजय म.सा.

कृति परिचय

आ कृति अध्यात्म मार्गनो उघाड करनार अद्भुत कृति छे। जेमां जैन, हिन्दु, वैष्णव के अन्य कोईपण संप्रदायना उल्लेख वगर फक्त आत्मा संबंधी विषयोनो संग्रह करवामां आव्यो छे। अध्यात्म रसिक जीवोने गमी जाय तेवी कृति छे। जो के रचना (कोइक श्लोकोमां) थोडी कठीन शब्दोमां लागे पण तेनो मर्म खूब गूढ छे। तेना मर्मने समजवा सामान्य माणसोने विवेचननी जरूर रहे।

आ कृतिनुं भाषांतर करवा प्रयत्न कर्यो छे अने भाषांतर सहित प्रकाशित थइ रही छे। क्यांक कोइक श्लोको खोलवानी तकलीफ पडी हती। जेनुं सम्मार्जन प.पू. यशरत्नविजय म.सा. प.पू.त्रिभुवनरत्नविजय म.सा., प.पू.जिनप्रेमविजय म.सा. तथा प.पू.भावप्रेमविजय म.सा. ए कर्युं छे। कृतिने शुद्ध करी संपूर्ण भाषांतर करवा द्वारा अलंकृत करी छे त्यारे आ भाषांतर शक्य बन्युं छे। तेमनो आभार अत्र स्वीकार करूं छुं। ज्यां भाषांतरमां विशेष समजवा जेवुं लाग्युं छे त्यां विशेष पण समजण आपी छे। अमुक गाथामां तो संसारी जीवने जाणे रीतसर फटकार्यो होय तेम जणाय छे। गाथा ८ थी १६, ३५, ३७, ४२, ५२ विगेरे विशेष ध्यानार्ह छे। जेने वांचीने ममरावववा जेवी छे। जेओ संकल्प-विकल्पना जाळामां फसायेलां छे तेओ आ कृतिने खास वांचे। हार्द समजे अने अमलमां मूके तो चोक्कस स्वभाव परिवर्तन थाय। आनंदनो उदधि उछळवा लागे, एवी अद्भुत आ रचना छे।

कर्ता परिचय

आ कृतिना कर्ताए पोताना नामनो क्यांय उल्लेख कर्यो जणातो नथी जेथी कर्ता अज्ञात छे। कृतिनी रचना परथी एवो निर्णय थइ शके के कृतिना कर्ता कोइ आध्यात्मरसिक जीव होवा जोइए।

बीजुं के- हेमचंद्राचार्य ज्ञानभंडार, पाटण अने जिनशासन आराधना ट्रस्टमांथी प्राप्त थयेल हस्तप्रतमां प्रस्तुत कृति साथे 'योगसार' अने पद्मनंदि पंचाशिका पण साथे लखायेलां छे। एक अंदाज प्रमाणे जे 'योगसार' ग्रंथना कर्ता छे ते ज 'योगकल्पद्रुम'

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ना ग्रंथकार होइ शके।

१. बन्ने कृति एक ज प्रतमां साथे लखेली मळे छे।

२. बन्ने कृतिमां समाधि-समताभावनी महत्ता दर्शावती विषय साम्यता छे।

३. बन्ने कृतिना कर्ता अज्ञात छे, प्राचीन छे। अर्थात् कर्ता पोताने जणाववा अने अहंभावने पोषवा इच्छता नथी।

४. बन्ने कृतिनी रचना अनुष्टुप छंदमां छे। भाषा पण कंइक अंशे समान लागे छे।

५. कर्ताए पोताना समयनी पण जाणकारी आपी नथी।

कंइक अंशे समानता भासवाथी उपरोक्त अनुमानोनो उल्लेख करेल छे। विद्वद्जनो तेनुं संशोधन करे तेवी भावना।

हस्तप्रत परिचय

त्रण स्थळेथी हस्तप्रत मने प्राप्त थइ छे। तेना आधारे आ कृतिनुं संशोधन करी प्रकाशित करवा प्रयत्न करायो छे। आदर्श प्रत तरीके जिनशासन आराधना ट्रस्ट तरफथी प्राप्त पा.का.हे. डा.क्र.१९६, प्रत क्र. ७८५७ नो उपयोग करेल छे। जेनी J – संज्ञा आपी छे। पाठांतर माटे उपयोगमां लीधेल प्रतोमांथी हेमचंद्राचार्य ज्ञानभंडार, पाटण डा.नं. १६७, क्र.- ६५९५ ने P संज्ञा अने बाबुभाई सरेमलजी तरफथी प्राप्त राधनपुर सागरगच्छ प्रत क्र. ३७६/१० ने S संज्ञा आपेल छे। शुद्धपाठने संपादनमां स्थान आपेल छे अने अशुद्धपाठने फुटनोटमां दर्शावेल छे।

१) जिनशासन आराधना ट्रस्ट तरफथी प्राप्त - पा.का.हे. डा.क्र.१९६, ग्रंथ क्रमांक-७८५७ आ प्रति अत्यंत सुवाच्य छे। जेमां १ पाना पर २४ पंक्ति छे। कुल २ पाना छे। कर्ता के संवत् विगेरेनी कोइ पुष्पिका प्राप्त थती नथी।

२) हेमचंद्राचार्य ज्ञानभंडार, पाटण – डा.१६७, ग्रंथ क्रमांक-६५९५ कुल ४ पाना छे। दरेक पाना पर १५ पंक्तिओ छे। त्रीजा पानामां त्रण पंक्तिमां अक्षरोनी स्याही फेलाववाथी मटी गया छे लेखक के संवत् विगेरेनी कोइ पुष्पिका प्राप्त थती नथी।

३) अहो श्रुतज्ञानम् – बाबुभाई सरेमलजी तरफथी प्राप्त राधनपुर सागरगच्छ प्रत क्र. ३७६/१० कुल २ पाना छे। दरेक पाना पर '१९' पंक्तिओ छे। शरूआतनी गाथा बरोबर वांची शकाती नथी। तेमां पण लहिया के संवत् विगेरेनी कोइ पुष्पिका प्राप्त थती नथी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योगकल्पद्रुम

अर्हन् मुनीन्दुर्लोकेशः, केशवः शिव इत्यमी ।
पर्यायाः पर्यवस्यन्ति, यत्र तद् दैवतं स्तुमः ॥१॥

अनु.- अरिहंत, मुनीन्दु = बुद्ध, लोकेश = ब्रह्मा, कृष्ण, शिव आ बधा पर्यायो जेमां अंत पामे छे = समाई जाय छे ते देवपणानी हुं स्तवना करू छुं।

जीयासु-र्योगिनां योग-रहस्यस्नातचेतसाम् ।
परानन्दामृतस्यन्द-सुन्दराः सुखसम्पदः ॥२॥

अनु.- योगना रहस्योथी शुद्ध – पवित्र थयेला मनवाळा योगीपुरूषोनी परम – श्रेष्ठ आनंदरूपी अमृतना स्पंदन = झरणाथी सुंदर एवी सुखसंपत्तिओ जय पामो।

सुधांशो[१]-रंशवो यत्र[२] , विदधत्यधर्मर्णताम् ।
तदिदं योगिनांमान्य[३] -मौदासीन्यमुपास्महे ॥३॥

अनु.- चंद्रना किरणो जेमां देवादारपणुं करे छे ते योगीपुरूषोने मान्य एवी ते उदासीनतानी अमे उपासना करीए छीए। (औदासीन्य एटलुं निर्मळ छे के चंद्रकिरणोए पण तेनी पासेथी देवुं लईने निर्मळता धारण करी छे।)

अत्र विश्वत्रयो[४] जैत्र-मद्वैतं सुखदुःखयोः ।
यत्प्रसादाप्रसादाभ्यां, भूयात्तन्मानसं वशे[५] ॥४॥

अनु.- अहीं जेनी कृपाथी विश्वत्रयने जीतनारुं एवुं सुख दुःखनु अद्वैत थाय छे = बाह्य दुःख सुख समान थई जाय छे। ते मन वशमां थाओ। अकृपा पक्षे अर्थ – जेनी अकृपाथी जगतने जीतनार सुख दुःखनुं अद्वैत थाय छे = बाह्य सुख पण दुःख समान थई जाय छे।

वासना विशदा काचित्कदाचित् गोचरं गता ।
हृदिस्थेमानमानेतुमियं[६] श्लोकैर्निबध्यते ॥५॥

अनु.- क्यारेक कोई पवित्र भावना बोधनो विषय बनी, आ भावना हृदयमां स्थिरताने पामे (ए हेतुथी = स्थिरता लाववाने) श्लोको थी बद्ध कराय छे।

इदं हि जनताचेतः, सुखास्वादाय सादरम् ।
सम्भ्रमेण भ्रमद् दुःखा-वर्त्तगर्ते विवर्त्तते ॥६॥

---

१. P- शे, २. P- यस्य, ३. P - गीनां मन्य, ४. P,S - त्रये, ५. P,S - वसे, ६. P - सयां, S - मथ.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनु.- सुखनो आस्वाद करवा माटे आदरपूर्वक, उतावळथी भमतुं लोकोनुं आ मन, खरेखर ! दुःखोना वमळनी खाईमां डूबी जाय छे।

यथा दन्ती वशं याति, श्रृणिभिः मसृणेतरैः ।
शुद्धैरध्यात्मशास्त्रार्थ-रहस्यै मानसं तथा ॥७॥

अनु.- जे प्रमाणे कठोर एवा अंकुश वडे हाथी वश थाय छे। तेम शुध्ध एवा अध्यात्मशास्त्रना रहस्यो वडे मन स्वाधीन थाय छे।

एहि रे याहि रे चक्रे, केषां[७] न श्रुतिषु श्रुतम् ।
परं परिमलस्तस्य, वि[८]लीनो विमलात्मसु ॥८॥

अनु.- 'तुं आव, तुं जा' (व्यवहारमां प्रयोजाता) आवा शब्दो तो कया लोकोना काने नथी पडघाया ? पण आ शब्दोनी परिमल – सुगंध – सुवास – ऐदंपर्य तो केटलांक निर्मल आत्माओमां ज निवास पामे छे। (के जे आ शब्दो परथी जन्म – मृत्युना संकेत समजी जीवननी नश्वरतानो बोध केळवी शके छे।)

श्रुतं तदस्तु दूरेण, क्रूरेण विधिना कृतम् ।
यत्र सत्यपि वीक्ष्यन्ते, दुरीश्वरमुखत्विषः ॥९॥

अनु.- (व्यवहारमां) 'तुं आव, तुं जा' आवा शब्दो सांभळवानी वात तो दूर रही, क्रूर विधाताए तो (जन्म – मरणनु सर्जन करीने) आवक – जावकनी वातने साक्षात् करी बतावी दीधी छे ! जे वास्तविकतानी सामे मोटा दुरीश्वरोनी मुखनी कांतिओ पण वास्तविकताने पलटवा माटे असमर्थ पूरवार थयेली जोवा मळे छे।

विधूय धन्यमध्वानं, मनःप्रशमकोमलम्[९] ।
किमु शब्दार्थसंरम्भ[१०], दर्भगर्भेषु धावसि ॥१०॥

अनु.- मनना प्रशमरूप कोमल रस्ताने छोडीने, शा माटे शब्दार्थना उपर कोप करवा रूप घासथी युक्त रस्ताओ पर दोडे छे? (समाधिमय (समतामय) कोमळ रस्ताने छोडीने संकल्प – विकल्पवाळा (जेनाथी दुःखनी प्राप्ति थाय छे तेवा) तीक्ष्ण घासवाळा रस्ता पर केम दोडे छे?

ज्ञानं तदपि न ज्ञानं, तपस्तदपि नो तपः ।
ध्यानं तदपि न ध्यानं, न स्याद् येनापुनर्भवः ॥११॥

---

७. J,S - कस्य, ८. P - नि, ९. P - पेशल, १०. J,S - सन्दर्भ.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनु.- ते ज्ञान पण ज्ञान नथी, ते तप पण तप नथी, ते ध्यान पण ध्यान नथी जो तेनाथी अपुनर्भव न थाय। अर्थात् जो फरीथी जन्म लेवो पडे [जो तेनाथी भवभ्रमण न अटके तो बधुं नकामुं छे]।

पदवाक्यागमज्योति-स्तर्कतूर्यत्रयादिभिः।
भूमिकाभिर्नटीयन्ति, स्वात्मानं हन्त ! जन्तवः ॥१२॥

अनु.- पदवाक्य = व्याकरण, आगम = धर्मशास्त्र, ज्योतिः = ज्योतिषशास्त्र, तर्क = तर्कशास्त्र , तूर्य = संगीतशास्त्र , त्रय = त्रयी = ३ वेदो (मूळ वेद ३ छे) विगेरे भूमिका वडे (आ बधानो लोकैषणा विगेरे माटे उपयोग करीने) हंत = दुःख छे के पोताना आत्माने जीवो नट जेवुं आचरण करावे छे।

लक्ष्मीलौल्येन ये ज्ञानं, मर्दयन्ति दुरीश्वरैः।
सुधां निधाय मृत्स्नाया-मिच्छन्ति चयनं हि ते ॥१३॥

अनु.- जे दुरीश्वरो पैसानी लालसाथी ज्ञानने कचडी नाखे छे। तेओ अमृतने माटीमां मेळवीने संग्रह करवानुं इच्छे छे। (अथवा पैसाने माटे ज्ञानने कचडवुं ते अमृतने माटीमां नाखी देवा बराबर छे।)

ज्ञानाजीर्णभृतः केचिज्-ज्ञानदुग्धो(ग्धौ?)तवः परे।
केचिज्ज्ञानस्यवाहिकाः, केचिज्ज्ञानमयाः पुनः[११] ॥१४॥

अनु.- केटलाक ज्ञानना अजीर्णथी भरेला छे। केटलाक बीजा लोको ज्ञानरूपी दुध पीनारा बीलाडा जेवा छे। (जे पीए ओछुं अने ढोळे वधुं) केटलाक ज्ञानने वहन करनारा छे। (गधेडा जेवा चंदनभारने वहन करनारा छे। अर्थात् ज्ञान छे पण ते प्रमाणे आचरण नथी।) तो वळी केटलाक लोको ज्ञानमय छे। (अर्थात् ज्ञानने पचावी ते प्रमाणे जीवनारा छे।)

तपः श्रुतमयं रत्नं, यत्नैः सम्पन्नमात्मसात्।[१२]
आत्मन्निच्छां पुरस्कृत्य, तुच्छतां नीयते कुतः ॥१५॥

अनु.- हे आत्मन ! केटलाय प्रयत्न करीने श्रुतमय तपरत्न आत्मसात् थयुं छे तो हवे (अन्य) ईच्छाने आगळ करीने = प्राधान्य आपीने शा माटे ए रत्नने तुच्छ = असार बनावे छे?

(क्रमशः)

---

११. P - अन्येऽथज्ञानवाहिकाः, केऽपिज्ञानमयाः, पुनः, १२. P - मात्मनः.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मकथानुयोगनी महत्ता अने श्री देवभद्रसूरिकृत कथारत्नकोश

मुनि श्री पुण्यविजयजी

(गतांकथी आगळ...)

उक्त हकीकतनो स्पष्ट ख्याल आवे ते माटे आ नीचे थोडोक उतारो आपीए छीए :

कथारत्नकोश विजयकथानक ११

तस्स य रन्नो मित्तो अहेसि दढगाढरूढपडिबंधो।
आबालकालसहपंसुकीलिओ नाम सिरिगुत्तो ॥१९॥

सुहिसयणबंधवाणं थेवं पि हु नेव देइ ओगासं।
घणमुच्छाए परिहरइ दूरओ साहुगोट्ठिं पि ॥२१॥

नवरं चिरपुरिसागय-सावयधम्मक्खणं जहावसरं।
जिणपूयणाइपमुहं जहापयट्ट कुणइ किं पि ॥२२॥

उक्खणणखणणपरियत्तणाहिं गोवेइ तं च नियधणं।
अवहारसंकियमणो पइक्खणं लंछणे नियइ ॥२३॥

सिट्ठ जणणीए अन्नया य तुह पुत्त ! संतिओ ताओ।
साहिंतो मह कहमवि परितोसगओ गिहादूरे ॥५२॥

अट्ठावयस्स कोडीउ अट्ठ चिट्ठंति भूमिनिहियाओ।
ता वच्छ ! किं न ठाणाइं ताइं इण्हिं खणेसि ? त्ति ॥५३॥ इत्यादि ॥

संघाचारविधि विजयकुमारकथा पृ. ४२८

दृढगाढप्रतिबन्धः श्रीगुप्ताख्यः कुबेरसमविभवः।
सहपंसुकीलिओ तस्स आसि मित्तो महाकिविणो ॥२॥

न ददाति स्वजनेभ्यः किंञ्चिन्न व्ययति किञ्चिदपि धर्मे।
धणमुच्छाए वज्जइ गमागमं सव्वठाणेसु ॥३॥

नवरं चिरपुरुषागत-जिनवरधर्मक्षणं यथावसरम्।
जिणपूयणाइपमुहं जहापयट्ट कुणइ किं पि ॥४॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्खननखननपरिवर्तनादिभिः तद्धनं निजं नित्यम् ।
अवहारसंकियमणो गोवंतो सो किलेसेइ ॥५॥

सदनान्तः किञ्चिदपि द्रव्यमपश्यन्नसौ बहुक्लेशैः।
भोयणमवि अज्जंतो कया वि जणणीइ इम मुत्तो ॥८॥

वत्सेह स्थानेऽष्टौ कोटयः कनकस्य सन्ति निक्षिप्ताः ।
तुह पिउणा ता गिण्हसु कयं किलेसेहिं सेसेहिं ॥६॥

प्रस्तुत विजय नामना श्रेष्ठिपुत्रनी कथा कथारत्नकोशकारे चैत्याधिकारमां आपेली छे, त्यारे ए ज कथा संघाचारविधिना प्रणेताए स्तोत्रना अधिकारमां वर्णवेली छे। कथारत्नकोशमां ए कथा आखी प्राकृतमां छे, त्यारे संघाचारविधिकारे ए कथाने बे भाषामां एटले के एक ज गाथामां पूर्वार्ध संस्कृत अने उत्तरार्ध प्राकृत एम बे भाषामां योजेली छे। संघाचारविधिटीकामांनी कथामां जे उत्तरार्ध प्राकृत छे ते आखी कथामां मोटे भागे कथारत्नकोशना अक्षरेअक्षर उद्धरेल छे अने पूर्वार्ध पण कथारत्नकोशमांनी कथाना लगभग अनुवाद जेवा छे, जे उपर आपेली सामसामी गाथाओने सरखाववाथी स्पष्ट थई जाय एम छे।

आचार्य महाराज श्री विजयनीतिसूरि तरफथी प्रसिद्ध थयेल गुरूतत्त्वसिद्धिमां पृ. ४७ उपर संवेगरंगशालाना नामे उद्धरेल **"इत्थंतरम्मि सड्ढो आसधरो नाम भणइ दुवियड्ढो"** ए गाथाथी शरू थतुं ५९ गाथानुं जे प्रकरण छे ते आखुंय कथारत्नकोशना पृ. १० थी १२ मां गाथा १८५ थी २४३ सुधीमां छे। गुरुतत्त्वसिद्धिमां आ प्रकरण संवेगरंगशालाना उतारा तरीके जणावेल छे। पण खरी रीते आ प्रकरण कथारत्नकोशमांनुं ज छे। आ उपरथी गुरुतत्त्वसिद्धिना रचना समय उपर पण प्रकाश पडे छे अने कथारत्नकोशनी आदेयता पण पुरवार थाय छे।

विधिप्रपा पृ. १०९ उपर प्रतिष्ठा प्रसंगने लगती केटलीक मुद्राओना वर्णन अंगेनी पांच गाथाओ आपेली छे ते अने त्यारपछी पृ. १११ उपर प्रतिष्ठा संबंधे जे ३९ गाथाओ छे ते बधी अक्षरशः प्रस्तुत कथारत्नकोशमां पृ. ८६ गाथा १७ थी ५५ सुधीमां उपलब्ध छे तथा पृ. ११४ उपर 'ध्वजारोपणविधि'ना नाम नीचे जे ४० थी ५० गाथाओ नोंधेली छे ते पण कथारत्नकोशमां आवता विजयकथानकमां पृ० ७१ उपर आपेली ११४ थी १२४ गाथाओ छे। विधिप्रपाकारे त्यां कथारत्नकोशना नामनो उल्लेख पण कर्यो छे।

(अनुसंधान पृष्ठ २० पर)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक नाम : Calligraphy and Art of Writing in Jain Manu scripts.

लेखक : डॉ. श्रीधर अंधारे।

संपादक : श्री रतन परिमू।

प्रकाशक : भूलाभाई एवं धीरजलाल देसाई मेमोरियल ट्रस्ट, अहमदाबाद।

प्रकाशन वर्ष : ईस्वी सन् २०२०।

भाषा : अंग्रेजी।

विशेषता : जैनशास्त्रों के संदर्भ में लिपि एवं लेखनकला की विकास यात्रा का सोदाहरण विस्तृत विवरण।

जैन परम्परा में श्रुत की महिमा अति महत्त्वपूर्ण है। पाँच ज्ञानों की शृंखला में श्रुतज्ञान को दूसरा स्थान प्राप्त है। श्रुत की आकृति को अक्षर कहते हैं। यह आकृति ही लिपि के नाम से जानी जाती है। किसी भी भाषा को आकार देने हेतु लिपि की आवश्यकता होती है।

ब्राह्मी एक लिपि भी है और श्रुतज्ञान का एक प्रकार भी है। ब्राह्मी लिपि समस्त भारतीय लिपियों की जननी है। लिपि में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। समय, भाषा, देश आदि के कारण इसमें परिवर्तन होते रहते हैं। भारतवर्ष की मूल लिपि ब्राह्मी लिपि है। इस लिपि में लिखा गया प्राचीन शिलालेख अनेक स्थलों पर उपलब्ध हैं। शिलालेखों में उपलब्ध लिपि और आज के प्रचलन में जो लिपि है उसमें बहुत बड़ा अन्तर दृष्टिगोचर होता है। इसका विकास अलग-अलग काल एवं अलग-अलग प्रदेशों में होता रहा है और सुलेखन कला में परिवर्तित होती रही है।

प्रस्तुत पुस्तक हमें लिपि माला की एक रोचक एवं रंगीन यात्रा पर ले जाता है। लिपि के प्रारूप से लेकर लेखन कला में बदलने तक के मुकामों की एक रसप्रद अनुभूति इस पुस्तक के माध्यम से हमें प्राप्त होगी। प्रधानतः यह ग्रंथ जैनलिपि के स्वरूप एवं विकास यात्रा को दर्शाता है।

सर्वप्रथम इस विषय में आगमोद्धारक पूज्य मुनि श्री पुण्यविजयजी म. सा. ने "भारतीय श्रमण संस्कृति अने लेखनकला" नामक ग्रंथ के माध्यम से इस विषय पर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकाश डाला था। यह ग्रंथ लिपि एवं लेखन कला से संबंधित उनका अद्वितीय ग्रंथ है। इस विषय से संबंधित अंग्रेजी भाषा में कोई प्रमाणिक ग्रंथ उपलब्ध नहीं था, जिसकी क्षतिपूर्ति डॉ. अंधारेजी ने कर दी है।

प्रस्तुत ग्रंथ में शिलालेख, ताम्रपत्र, लकडी, कपडा, ताड़पत्र, हस्तप्रत आदि लेखन सामग्री पर विभिन्न काल एवं विभिन्न प्रदेशों में लिखित लिपि एवं लेखन कला का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। इसमें लिपि एवं लेखन कला के विकास को बहुत ही सुन्दर ढंग से विवेचित किया गया है। भिन्न-भिन्न काल एवं प्रदेशों के शिलालेखों, ताम्रपत्रों, लकडी, कपड़ा, ताड़पत्र, हस्तप्रत आदि पर रंगीन चित्रों के माध्यम से लिपि के विकास यात्रा को समझाने का प्रयास किया गया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति सहज ही उस भिन्नता को समझ सकता है।

देवनागरी लिपि का उपयोग आधुनिक भारत में संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश, हिन्दी, मराठी, नेपाली आदि भाषाओं को लिखने हेतु किया जाता है। भारत के बहुत बड़े भूभाग में देवनागरी लिपि का उपयोग लेखन हेतु किया जाता है।

प्रस्तुत ग्रंथ के संयोजन में आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का बहुत बड़ा योगदान रहा है। उसमें प्रयुक्त अनेक हस्तप्रत, ताडपत्र, लकड़ी के पट आदि अनेक लेखन सामग्री द्वारा ज्ञानमंदिर ने सहयोग प्रदान किया है। यह बात संस्था को गौरव का अनुभव कराता है।

डॉ. श्रीधर अंधारेजी L.D. संग्रहालय संस्था के साथ आजीवन जुड़े रहे। उनकी सेवा का लाभ हमारी संस्था को भी प्राप्त हुआ तथा संस्था से वे भी लाभान्वित होते रहे हैं। यह दुःखद रहा कि उनके जीवन काल में यह ग्रंथ अपनी पूर्णता को प्राप्त कर विद्वानों के समक्ष नहीं आ सका। किन्तु इतिहास साक्षी है कि जब भी कोई पुण्य कार्य प्रारंभ किया गया हो और प्रारंभकर्ता यदि संयोगवश नहीं रहा हो तो उसे कोई न कोई अवश्य ही पूर्ण कर देता है। उसी प्रकार इस ग्रंथ को साथ मिला श्री सुब्रतो भौमिक एवं सुश्री पायल नाणावटी का, जिन्होंने अपने अनुभव एवं विषय के ज्ञान का उपयोग करते हुए इसे पूर्णता प्रदान की है। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर परिवार उनके इस कार्य की अनुमोदना करते हुए उनसे इसी प्रकार के और साहित्य की अपेक्षा रखता है। आशा है श्री भौमिक एवं सुश्री नाणावटी भविष्य में इसी प्रकार उत्तम साहित्य का सृजन करते हुए विद्वद्वर्ग को अनुपम उपहार प्रस्तुत करते रहेंगे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाचार सार

हिंमतनगरे प्रतिष्ठा विधान

हिंमतनगर की धन्यधरा पर श्री सोसायटी नगर श्वे. मू. पू. जैनसंघ महावीर नगर शांतिनाथ जिनालय में श्री जीरावला पार्श्वनाथजी प्रभु, पू. आ. श्री कैलाससागरसूरि गरुप्रतिमा तथा पू. आ. श्री आनंदघनसूरि गुरुप्रतिमा प्रतिष्ठा के त्रिदिवसीय महोत्सव के प्रसंग पर राष्ट्रसंत प.पू.आ. भ. श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा का पदार्पण हुआ। इस अवसर पर पू. आचार्य श्री प्रदीपचंद्रसूरि म.सा. आदि की भी पावन निश्रा भी प्राप्त हुई। नगरजनों ने कोरोना की गाईडलाईन का पालन करते हुए पूज्यश्री का नगर प्रवेशादि कराया। प्रतिष्ठा के लाभार्थी परिवार द्वारा दोनों पू. आचार्य भगवंतों को कामली बहोराई गई तथा गुरुपूजन किया गया।

दि. २३/०४/२०२१ चैत्र शुक्ल ११ शुक्रवार को गुरुभगवंतों की स्वागत यात्रा, कुंभस्थापना, पाटलापूजन व पंचकल्याणकपूजा रखी गई, दि. २४ को अठारह अभिषेक, पू. आ. श्री कैलाससागरसूरि व पू. आ. श्री आनंदघनसूरिजी की गुणानुवाद सभा तथा नवपदजी की पूजा रखी गई, तीसरे दिन प्रतिष्ठा विधान, महावीरजिन जन्मकल्याणक की रथयात्रा, प्रवचन, लघुशांतिस्नात्र पूजन व कुमारपाल महाराजा की भव्य आरती का आयोजन हुआ। तीनों दिन संध्या भावनाभक्ति भी की गई।

पू. राष्ट्रसंतश्री के प्रासंगिक प्रवचन में - भारत का इतिहास त्यागीयों का इतिहास है, मन की गुलामी से मुक्त होकर स्वयं के सम्राट बनें, पू. आ. श्री कैलाससागरसूरि म. सा. का आहार व दृष्टिसंयम, आगलोड तीर्थोद्धारक पू. आ. श्रीआनंदघनसूरि म.सा. का प्रेरणादायी जीवन, गुरुमूर्ति स्थापना के साथ गुरुगुणों की हृदयस्थापना आदि का सदुपदेश दिया। संघ के द्वारा गुरुदेव को चातुर्मासार्थ विनती की गई। संघ के द्वारा दोनों उपकारी गुरुजनों के प्रति भक्ति भावना व्यक्त की गई।

त्रिदिवसीय महोत्सव के लाभार्थीः- गुरुभगवंतों के नगरप्रवेश का लाभ सेठ श्री जयंतिलाल जेचंददास शाह परिवार ने लिया, श्री जीराउली पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा भराने व प्रतिष्ठा कराने का लाभ सेठ श्री केशवलाल जीवराजजी शाह परिवार, चारित्रचुडामणि पू. आचार्य श्री कैलाससागरसूरिजी महाराजा की प्रतिमा भराने व प्रतिष्ठा कराने का लाभ जेचंददास शाह परिवार, पू. आचार्य श्री आनंदघनसूरिजी म.सा. की प्रतिमा भराने व प्रतिष्ठा कराने का लाभ सेठ श्री चंद्रकांत चीमनलाल परिवार तथा प्रतिष्ठा में श्रीमति रेखाबेन कुमुदचंद्र सेठ परिवार ने भी लाभ लिया। गुरुपूजन तथा कांबली अर्पण का लाभ सुभद्राबेन कांतिलाल वीरचंदभाई शाह परिवार ने लिया।

दीव-दमण-लक्षदीप के प्रशासक एवं परम गुरुभक्त श्री प्रफुल्लभाई पटेल के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गृहांगण में गुरुदेव ने पदार्पण किया और ३ दिनों तक स्थिरता भी की । परिवार द्वारा गुरुपूजन, कांबली अर्पण किया गया व अन्य उपकरण अर्पित किया गया। हितशिक्षा में राष्ट्रसंतश्री ने प्रतिदिन परमात्मस्मरण, आत्मा की खुराक, विचारों की शुद्धि व परिवार को प्रेम का मंदिर बनाने की बात कही।

नवकार महामंत्र के विशिष्ट आराधक अमृतवाणी के धनी प. पू. आ. भ. श्री अमृतसागरसूरिजी म.सा. समाधिपूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्यदेव श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा के तृतीय शिष्यरत्न प.पू. आचार्य श्री अमृतसागरसूरि म.सा. दि. ०३/०५/२०२१ को दोपहर १२ बजे नवरंगपुरा, अहमदाबाद में समाधिपूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए। पूज्यश्री शांत, मधुरभाषी एवं सदा प्रसन्न स्वभाव के धनी थे। पूज्यश्री शिष्य-प्रशिष्य, स्व-पर समुदाय के सभी साधु-साध्वीजी भगवंतों के प्रति अपार वात्सल्य बरसाते थे और सर्वत्र आदरपात्र थे।

पूज्यश्री अपने बुलंद एवं मधुर कंठ से परमात्मा के भाववाही प्राचीन स्तवनों को एवं हृदय को भावित कर देने वाले सज्जाय पद आदि को जब शास्त्रीय राग-रागीनी में गाते थे तब सारे श्रोताजन उन ही भावों में रंग जाते थे।

पूज्यश्री ने नवकारमंत्र को अपना सर्वस्व बना लिया था और दिनरात जापमग्न रहते थे, यही उनकी पहचान बन गई थी। दि. २२ मई (कोबा तीर्थ में श्री महावीरजिन तिलकदर्शन के दिन) १९५२, वि.सं. २००८ चैत्र कृष्ण १४ (शास्त्रीय वै.व.१४) गुरुवार के दिन गुजरात के साणंद में योगनिष्ठ आचार्यदेवश्री बुद्धिसागरसूरीश्वरजी के परम भक्त सुश्रावक पिता श्री दलसुखभाई मेहता के घर श्राविका मातुश्री शांताबहन की कुक्षि से जन्म लिया। परिजनों के आग्रह से उनका नाम प.पू. आचार्य भगवंत श्री कैलाससागरसूरि म.सा. ने अवंतीकुमार रखा था।

१५ वर्ष की लघुवय में प.पू. आ. श्री कीर्तिसागरसूरीश्वरजी तथा आचार्य श्री कैलाससागरसूरिजी म.सा. के वरदहस्त से भगवाननगर टेकरा, अहमदाबाद में दि. २३/११/१९६८, वि.सं. २०२५ मृगशीर्ष व. ४, शनिवार को दीक्षा हुई और राष्ट्रसंत प. पू. आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी के तृतीय शिष्य के रूप में दीक्षित हुए। गुरु के प्रति इनका समर्पण भाव अद्भूत था। दीक्षा के बाद गुरुनिश्रा में अध्ययन किया, नेपाल से तमिलनाडु, गुजरात से बंगाल व बिहार तक प्रायः समस्त भारत की विहारयात्रा की और पूज्य राष्ट्रसंतश्री की शासनप्रभावना के कार्यों में सदैव सहयोगी रहे।

आचार्य पदवी दि. ०५/०३/२००७ वि.सं. २०६३ फाल्गुन कृष्ण १(शास्त्रीय चैत्र

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृष्ण १), सोमवार के दिन कोबा में हुई। आयु ६८ वर्ष व दीक्षा पर्याय ५३ वर्ष का रहा। ३ वर्ष पूर्व कोबा में दीक्षा के ५० वर्ष हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया था। पूज्यश्री के शिष्य परिवार में पूज्यश्री के सांसारिक भतीजे JITO, JIO आदि संस्थाओं के प्रेरक पूज्य गणिवर्य श्री नयपद्मसागरजी, अनेक भगीरथ शासन प्रभावना के कार्य कर रहे हैं।

पूज्यश्री ने स्वास्थ्य के कारणों से विगत कुछ वर्षों से कोबा तीर्थ को अपनी स्थिरता एवं साधना का लाभ प्रदान किया था। पूज्यश्री के आकस्मिक कालधर्म के समाचार से जैन समाज मर्माहत हुआ है। पूज्यश्री के पावन देह का अग्निसंस्कार जूना कोबा मुक्तिधाम में किया गया। उसमें पूज्यश्री के सांसारिक परिजन, जैन समाज के विविध संस्थाओं के अग्रणी महानुभाव उपस्थित रहे थे। इस प्रसंग का यु ट्युब पर लाईव प्रसारण किया गया, इस माध्यम से लाखों श्रद्धालुओंने अपने-अपने स्थान से साश्रु श्रद्धासुमन समर्पित किये। पूज्यश्री के कालधर्म से जिनशासन को बहुत बडी हानी हुई है।

जिनशासन के महान आचार्यों, श्रेष्ठिवर्यों आदि की उपस्थिति में पू.आ. श्री अमृतसागरसूरिजी म.सा. की लाईव गुणानुवाद सभा

दि. ०६/०५/२०२१ गुरुवार को प्रातः ९:३० बजे Zoom You Tube के माध्यम से गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। विविध समुदाय के गुरुभगवंतों, विविध संस्थाओं के अग्रणी, पूज्यश्री के सांसारिक परिवार श्री दलसुखजी गोविंदजी मेहता परिवार के सदस्य व अन्य गुरुभक्तों ने अपने-अपने स्थान से इस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम का प्रारंभ तपागच्छाधिपति प. पू. आ. भ. श्री मनोहरकीर्तिसागरसूरि म. सा. के मंगलाचरण से हुआ। यूट्यूब के माध्यम से इस कार्यक्रम का लाईव प्रसारण किया गया।

पूज्य राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा ने बताया कि वे शांत व मृदु स्वभाव के थे, वे छोटे साधुओं को गोचरी आदि विधि बडे ही प्यार से सिखाते थे, संयममार्ग में साधुओं को स्थिर करने में माहिर थे। पू. राष्ट्रसंत श्री ने कहा कि उनका परिवार पीढियों से बुद्धिसागरसूरि समुदाय का समर्पित उपासक रहा है। पूज्यश्रीने दलसुखभाई मेहता से एक पुत्र शासन को समर्पित करने हेतु मांग की तो उन्होंने भक्ति से जिन्हें ले जाना हो उन्हें ले जाने की अनुमति दे दी और सभी बच्चों में से अवंतिकुमार ने गुरुचरणों में समर्पित होने की भावना व्यक्त की। फिर अवंती से वे अमृतसागरसूरि बने।

गुणानुवाद सभा में अन्य सभी ने पूज्यश्री के कई उज्ज्वल गुणों पर प्रकाश डाला। इस सभा में भाग लेने वाले अन्य पूज्य आचार्य भगवंतादि में- पू. आ.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री वर्द्धमानसागरसूरि, पू. आ. श्री विनयसागरसूरि, पू. आ. श्री यशोवर्मसूरि (विक्रमसूरि समुदाय), पू. आ. श्री राजहंससूरि म.सा.(नेमिसूरि समुदाय), पू. आ. श्री देवेन्द्रसागरसूरि, पू. आ. श्री हेमचंद्रसागरसूरि, पू. आ. श्री विवेकसागरसूरि, पू. आ. श्री अजयसागरसूरि, पू. आ. श्री विमलसागरसूरि, पू. आ. श्रीचंद्रजीतसूरि (पू. पं. श्री चंद्रशेखरवि.म.सा. के शिष्यरत्न), पू. आ. श्री अरविंदसागरसूरि, पू. आ. श्री महेन्द्रसागरसूरि, बंधुबेलडी की ओर से पंन्यास श्री लब्धिचंद्रसागरजी, पू. गणिवर्य श्री नयपद्मसागरजी म.सा., पू. गणिवर्य श्री प्रशांतसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री भव्यकीर्तिसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री ध्यानपद्मसागरजी पू. मुनि श्री अक्षयपद्मसागरजी (दोनों पू. अमृतसागरसूरिजी के प्रशिष्य) आदि गुरु भगवंतो ने अपने श्रद्धासुमन अर्पण किये। पू. आ. श्रीअशोकसागरसूरि म.सा.ने भी पूज्यश्री के कालधर्म पर व्यथित होने का संदेश भिजवाया था।

अन्य महानुभावों में डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी (भारतीय राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री और सांख्यिकीविद, राज्य सभा में संसद सदस्य), श्री श्रीपालभाई (ट्रस्टी, श्री आणंदजी कल्याणजी पेढी एवं श्री महावीर आराधना केन्द्र कोबा), श्री कल्पेशभाई वी. शाह (ट्रस्टी, आणंदजी कल्याणजी पेढी एवं श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा), श्री घेवरचंदजी वोरा (JIO), श्री पृथ्वीराज कोठारी (प्रायोजक JIO, JITO), श्री महेशभाई (पूज्यश्री के सांसारिक बडे भ्राता, ७ भाईयों में से तीसरे भाई), शैलेषभाई (पूज्यश्री के सांसारिक लघुबंधु, ७ में से ५ वें भाई), श्री दिनेशभाई (साणंद सागर गच्छ ट्रस्टीश्री), श्री आशिषभाई (JITO संगठन के पायोनियर), श्रीनीलेशभाई (ट्रस्टी, श्री साणंद), श्रीभूपेन्द्रभाई वोरा (ट्रस्टी, श्री महुडीतीर्थ), श्री परागभाई महेता, श्री दर्शनभाई, डॉ. भरतभाई परमार (डॉ.फेडरेशन JITO) आदिने अपने श्रद्धांजली उद्गार व्यक्त किये थे। पूज्यश्री के कालधर्म के समाचार मिलने पर गुजरात के मुख्य मंत्री श्री विजयभाई रूपाणीजी द्वारा भी पूज्यश्री को भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की गई।

इस प्रकार आचार्य भगवंत अन्य पदस्थ मुनि भगवंतो तथा श्रेष्ठीवर्यों आदि महानुभावों ने गुणानुवाद किया था और हजारों लोगों ने युट्युब पर लाईव गुणस्मरण किया था। प्रत्येक वक्ता के वक्तव्य में पूज्यश्री के विविध गुणों की झलक देखने को मिल रही थी। इस प्रकार की लाईव गुणानुवाद सभा प्रायः पहली बार हुई। पू. आचार्य श्री अमृतसागरसूरि म.सा. के शिष्यरत्न JIO, JITO के प्रेरक पूज्य गणिवर्य श्री नयपद्मसागरजी म.सा. के मार्गदर्शन में इस प्रसंग का आयोजन किया गया था। गुणों के सागर गुरुवर को नतमस्तक भावपूर्ण श्रद्धांजली एवं कोटीशः वंदन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुनितधामतीर्थ प्रेरक पू. आचार्य श्री प्रसन्नकीर्तिसागरसूरि म.सा. कालधर्म प्राप्त हुए

परोपकारी, व्यवहारदक्ष, पुनितधाम जैन तीर्थ प्रेरक प. पू. आचार्य भ. श्री प्रसन्नकीर्तिसागरसूरि म.सा. दि. २४/०४/२०२१ चैत्र शुक्ल १२ के दिन पुनितधाम जैन तीर्थ में कालधर्म प्राप्त हुए।

पूज्यश्री का जन्म उत्तर गुजरात के लींबोद्रा गाँव में वैशाख शुक्ल १३ दि. ०४/०५/१९५५ में माता लीलावतीबहन, पिता जयंतीभाई के घर हुआ था। उनका सांसारिक नाम पंकजकुमार था। बाल्यावस्था से युवावस्था में प्रवेश किया, व्यवसायार्थ मुबई गये, शादी तय हुई, शादी के अगले दिन भायंदर में पू. आचार्य श्री सुबोधसागरसूरीश्वरजी का भव्य नगरप्रवेश हुआ, उस समय परिवार के साथ वंदनार्थ गये, गुरुदेव ने पंकज का हाथ पकड़कर कहा कि 'लग्न एक भव का साथ है, भवोभव के साथ हेतु हमारा हाथ पकड ले' बस तेजी को टकोर काफी थी, फिर विवाह का दिन 'गुरुनिश्रा दिन' बन गया।

गुरु सान्निध्य में १ वर्ष रहकर फाल्गुन कृष्ण ७, दि. ०९/०३/१९८० को भगवाननगर टेकरा, अहमदाबाद में दीक्षित हुए। इस दीक्षा प्रसंग के समाचार उस समय गुजरात के प्रधान दैनिक समाचार पत्र 'गुजरात समाचार' के मुखपृष्ठ पर बड़े फोटो के साथ छपे थे। तत्पश्चात् १ वर्ष बाद उनके सांसारिक पिताश्री को भी पू. जयकीर्तिसागरजी के रूप में दीक्षित किया व उनके अंत समय तक उनकी उत्कृष्ट सेवा की।

पूज्यश्री गुरुकृपा व सुंदर संयमाराधना के प्रभाव से वचनसिद्धि के धनी बने। २०१४ में अहमदाबाद में तपागच्छाधिपति पू. आ. श्री मनोहरकीर्तिसागरसूरीश्वरजी म. के द्वारा आचार्य पद प्रदान किया गया। ४२ वर्ष के संयम जीवन में उन्होंने कई अंजनशलाका, प्रतिष्ठा, दीक्षा, यात्रासंघ, उपधानादि शासनप्रभावना के कार्य किये।

चतुर्विध संघ के सुविधार्थ अपनी जन्मभूमि में पुनितधाम जैन तीर्थ की स्थापना की। पूज्यश्री ने अपने शिष्य मुनि श्री भव्यकीर्तिसागरजी को कृपाप्रदान करके शतावधानी बनाया। गुरुदेव जिनशासन के महान प्रभावक थे, इनके चले जाने से जिनशासन को हुई कमी को पूरा करना बहुत ही कठिन है। परोपकारी, व्यवहारदक्ष गुरुवर को सादर श्रद्धांजलि सह कोटि-कोटि वंदन।

बोरीज तीर्थ में पूज्य पद्मकीर्तिश्रीजी म.सा. कालधर्म प्राप्त हुए

योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरीश्वरजी समुदाय के वरीष्ठ साध्वीवर्या पूज्य पुण्यप्रभाश्रीजी महाराज के तपस्वी तथा उत्तम संयम आराधक शिष्या पूज्य पद्मकीर्तिश्रीजी महाराज दिनांक २१-०४-२०२१ के दिन बोरीज तीर्थ में समाधिपूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए है। उनका जन्म स्थान माणसा था। संसारी नाम प्रवीणा था। दीक्षा तिथि वै. व. २ वि. सं. २०२७, एवं दीक्षा पर्याय ५० वर्ष का था। स्वाध्याय हेतु ३००० गाथा मुख पाठ की हुई थी। "नमो चारित्तस्स" पद का एक करोड़ जाप किया था। पूज्य साध्वीवर्या श्री को सादर श्रद्धांजलि सह कोटि कोटि वंदन।

For Private and Personal Use Only

प. पू. आ. भ. श्री अमृतसागरसूरिजी महाराज साहब के ऑनलाईन गुणानुवाद सभा की झाँकी.

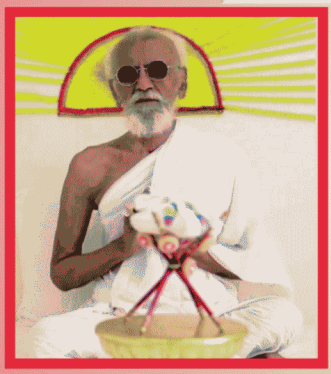

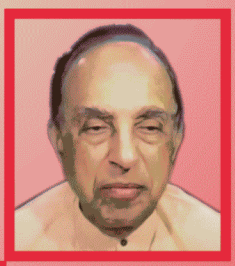

For Private and Personal Use Only

Registered Under RNI Registration No. GUJMUL/2014/66126 SHRUTSAGAR (MONTHLY).
Published on 15th of every month and Permitted to Post at Gift City SO, and on 20th date of every month under Postal Regd. No. G-GNR-334 issued by SSP GNR valid up to 31/12/2021.

पुनितधाम जैनतीर्थ के प्रेरक

प. पू. आ. भ. श्री प्रसन्नकीर्तिसागरसूरिजी को

सादर श्रद्धांजलि सह कोटि-कोटि वंदना.

BOOK-POST / PRINTED MATTER

प्रकाशक

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा
जि. गांधीनगर ३८२४२६
फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२
फेक्स (०७९) २३२७६२४९
Website : www.kobatirth.org
email : gyanmandir@kobatirth.org

Printed and Published by : HIREN KISHORBHAI DOSHI, on behalf of SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.&Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat.
And Printed at : NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9, Punaji Industrial Estate, Dhobighat, Dudheshwar, Ahmedabad-380004 and
Published at : SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.& Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. Editor : HIREN KISHORBHAI DOSHI

For Private and Personal Use Only